सर्वास्तिवाद का उद्भव व विस्तार

डॉ० बजरंग प्रताप मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर
प्राचीन इतिहास विभाग
शिवपत्ति पी०जी० कॉलेज, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर
ईमेलः bajranjpratap@gmail.com

सारांश

बौद्ध संघों के लोग अपने–अपने अनुसार बुद्ध–वचनों का अर्थ लेकर कार्य–संपादन करने लगे, जिससे कालान्तर में दो प्रधान वर्ग बने–महासांघिक और स्थविरवादी। स्थविरवादी लोक–परम्परा का निर्वाह और अनुगमन करने वाले लोग थे। उन्हें परम्परा में परिवर्तन–परिवर्धन स्वीकार्य नहीं था। कालान्तर में स्थविरवाद के दो भेद हेमवन्त और सर्वास्तिवाद हुए जो आगे चलकर वात्सीपुत्रीय, धर्मोत्तर, भद्रयानिक, सम्मितीय, छान्दागारिक, महीशासक, धर्मगुप्तिक, काश्यपीय और सौप्तात्तिक में विभाजित हुए। 'सर्वास्तिवाद के इतिहास में सम्राट कनिष्ठ के शासन काल और चतुर्थ बौद्ध संगीति का विशेष महत्व है। चतुर्थ शता० में भारत में आने वाले चीनी यात्री काहियान का कथन है कि पाटलिपुत्र व चीन में सर्वास्तिवाद का विशेष प्रभाव था।[1] सातवीं शता० में हर्ष के समय में भारत आए दूसरे चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है कि पर्सिया, साटीकोर, उर्शा, काशगर, बुन्की, कुच्ची, उद्यान, जलालाबाद, कपिशा, पेशावर, मतिपुर आदि में सर्वास्तिवाद का विकास हो रहा था। साथ ही सारनाथ, श्रावस्ती, पाटलिपुत्र, राजगृह, उज्जैन, मथुरा, कन्नौज में भी सर्वास्तिवाद अपने उत्कर्ष पर था।

सारनाथ अभिलेख, श्रावस्ती अभिलेख मथुरा अभिलेख कुर्रम में मूजषा लेख, जेदा अभिलेख आदि में सर्वाहस्तिवादियों का विविध संदर्भों में उल्लेख मिलता है।

मुख्य बिन्दु

बेरवादी, महासांघिक, चतुर्थ बौद्ध संगीति ह्वेनसांग, जलालबाद, कपिशा, श्रावस्ती, सारनाथ, मथुरा, अभिलेख, जेदा अभिलेख, कुर्रम, मंजूषा अभिलेख।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 10.03.2023
Approved: 21.03.2023

डॉ० बजरंग प्रताप मिश्र

सर्वास्तिवाद का उद्भव व विस्तार

RJPP Oct.22-Mar.23, Vol. XXI, No. I,

pp.097-101
Article No. 13

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2023-vol-xxi-no-1

बसुबन्धु ने सर्वास्तिवादी दर्शन का तृतीय शती० ई०पू० में हो गया था किन्तु कनिष्ठ के काल मेंइस दर्शन का सर्वाधिक उत्थान व प्रसाद हुआ। उसके शासन कला में प्राचीन बौद्ध सूत्रों पर ठीकाएं की गयी जिन्हें विभाषा कहा जाता है। सर्वास्तिवाद दर्शन को विभाषा से बड़ी सहायता मिली जिसके फलस्वरूप वह वैभाषिक नय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वसुबन्धु ने दस दर्शन का पल्लवन करते हुए अभिधर्मकोश नामक बहुचर्चित ग्रन्थ की रचना की।[3]

सर्वास्तिवाद के दार्शनिक केन्द्रबिन्दु के संबंध में यह माना जाता है कि यह निकाय 'नाम'' (माइन्ड) और ''रूप'', ''मैटर'' को सत्य मानता है। वह 'यह भी सत्य मानता है कि उन्हें 64 तत्वों में विभाजित किया जा सकता है। ये सभी भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों में रहते है। इसीलिए इन्हें सर्वास्तिवाद कहते है।[4] परमार्थ के मत को स्वीकार करते हुए नरेन्द्र देव का मत है कि अतीत, अनागत, प्रत्यत्पन्न, आकाश, प्रतिसंख्या विरोध, अस्तित्वा को स्वीकारने के कारण इसे सर्वास्तिवाद कहा गया।[5] इस मत का विश्वास था कि सर्वभूअस्ति सब चीजों का अस्तित्व है। स्थविस्वादियों के समान सर्वास्तिवादी भी बौद्ध धर्म के वास्तवादी या यथार्थवादी है।

उद्भव– सर्वास्तिवाद का उदय कहां और कब हुआ इसका निश्चित उत्तर देना कठिन है, किन्तु इतना संभाष्य है कि इसका उदय मगध में सम्राट अशोक के पहले हो चुका हो। क्योंकि अशोक के संरक्षण में संपादित तृतीय बौद्ध संगीति में संगीति के अध्यक्ष मोग्गलिपुत्र तिस्स को सर्वास्तिवादियों से प्रश्न करते हुए पाते है।[6] जापानी विद्वान टक्काशु इसे बौद्ध धर्म के प्राचीनतम् निकायों में से एक मानते हैं।[7] सर्वास्तिवाद का उदय बौद्ध संगीति के बाद और तृतीय बौद्ध संगीति के पहले मगध में पाटलिपुत्र के आस–पास या बज्जिगणसंघ के किसी भू–भाग में हुआ होगा। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार अशोक के समय मगध में सर्वास्तिवाद का केन्द्र नालन्दा था।

चतुर्थ बौद्ध संगीति के समय में भारत के विभिन्न भागों में फैले हुए सर्वास्तिवाद आचार्यों को पाते हैं। डॉ० दत्त का मत है कि अशोक समय में मोग्गलिपुत्रतिस्स से पराजित होने के बाद पाटलिपुत्र में सर्वास्तिवादियों का कोई सम्मान नही रहा। इसलिए वे मथुरा व कश्मीर चले गए तथा इन स्थानों को अपना केन्द्र बनाया।[8] सर्वास्तिवाद का प्रसार गांधार में भी मिलता है। अफगानिस्तान और बलुचिस्तान के अनेक स्थानों से भी इस निकाय के प्रमाण मिलते हैं।

सर्वास्तिवाद के इतिहास में कनष्कि के शासन मे चतुर्थ बौद्ध संगीति का विशेष महत्व है। इसी संगीति में तीनों पिटकों पर ''विभाषा शास्त्र'' नामक टीकाएं संस्कृत लिखी गयीं। सुत्रपिटक के विभाषाशास्त्र को उपदेश–शास्त्र कहा गया विनय पिटक के भाष्य को विनय विभाषा–शास्त्र और अभिधम के भाष्य को अभिधर्म विभाषा शास्त्र कहा गया। कालान्तर मे वसुबन्धु ने इसी पर अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ अभिधर्म–कोश की रचना की।[9]

फाह्यिान ने लिखा है कि पाटलिपुत्र और चीन में सर्वास्तिवाद का विशेष प्रभाव।[10] ह्वेनासांग ने भी लिखा है कि श्रावस्ती, सारनाथ, पाटलिपुत्र, राजगृह, उज्जैन, मथुरा तथा कन्नौज में इसनिकाय का प्रभाव था[11] साथ ही जलालाबाद, नगरहर कपिशा, पेशावर, मतिपुरा, पर्सिया आदि में सर्वास्तिवाद विकसित हो रहा था। सातवीं शता० में भारत आने वाले चीनी यात्री इत्सिंग ने अपने यात्रा विवरण में लिखा है कि ''यद्यपि सर्वास्तिवादी पूर्वी तथा पश्चिमी भारत में रहते हैं फिर भी उनका सुदृढ़ केन्द्र

देश का मध्य भाग तथा उत्तरी भाग ही हैं।[12] उसके अनुसार जावा, सुमात्रा चीन तथा मध्य एशिया में भी सर्वास्तिवादी पाए जाते हैं। दक्षिण सम्रुद के द्वीपों में दस देशों से भी अधिक ऐसे देश हैं जिनमें लोगों ने पूर्णतया मूल सर्वास्तिवाद को अंगीकार कर लिया है।[13]

डॉ० एस० बनर्जी ने, बुद्धिज्म इन इण्डिया एण्ड एग्राड में कहा है कि कि सर्वास्तिवाद निकाय ही एक ऐसा निकाय था जो भारत से थेरवाद के बिलुप्त हो जाने के बाद भी पर्याप्त समय बाद तक फलाता–फूलता रहा।[14]

आभिलेखिय संदर्भ

यहाँ के सर्वास्विादी अपनी आचार्य परम्परा माकाश्यप से उद्भूत मानते हैं। इनके बाद आनन्द संभूत, सांणवासी, उपगुप्त और भिक्षु धीतिक आचार्य हुए।[15] उपगुप्त को दिव्यावदान नामक संस्कृत–बौद्ध ग्रंथ में मौर्य अशोक का आचार्य तथा पथ प्रदर्शक बताया गया है। जबकि पालि बौद्ध साहित्य के अनुसार मो ग्गलिपुत्रतिरस अशोक के पथ प्रदर्शक और धर्माचार्य थे। इसे संदर्भ में प्रो० सी०डी० चटर्जी का अभिमत है कि उपगुप्त और मोग्गलिपुत्रतिस्स दोनों एक ही व्यक्ति थे।[16]

लेकिन चटर्जी महोदय के मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि मोग्गलिपुत्रतिस्स सर्वास्तिवाद के खण्डनकर्त्ता थे जिनके कारण ही सर्वास्तिवादियों को मगध त्यागना पड़ा था। उपगुप्त सर्वास्तिवाद के समर्थक आचार्य थे।

सारनाथ अभिलेख– सारनाथ से दो अभिलेख मिले हैं। पहला अभिलेख प्रथम शताब्दी ई०पू० का जबकि दूसरा तृतीय शताब्दी ई०पू० है।[17] इनमें सर्वास्तिवादियों का उल्लेख है।[18]

शाह जी की ढेरी मंजूषा अभिलेख–शाहजी की ढेरी नामक स्थान से कनिष्क के प्रथम शासकीय वर्ष के मंजूषा अभिलेख में महासेन के संघाराम के सर्वास्तिवादी भिक्षुओं को दान ग्रहण करते हुए पाते हैं।[19]

श्रावस्ती अभिलेख– श्रावस्ती में अनाथपिण्डक द्वारा बुद्ध को दान दिया गया प्रसिद्ध जेतवन विहार था। तेतवनाराम की को सम्ब कुटी से प्राप्त कनिष्क प्रथम के अभिलेख से ज्ञात होता है कि भिक्षु बल ने को सम्ब कुटी (बिहार) के सर्वास्तिवादी आचार्यों के लिए छत्रयुक्त बोधिसत्व की प्रतिमा दान दी थी।[20]

कुर्रम मंजूषा अभिलेख–कुर्रम मंजूषा अभिलेख में भी सर्वास्तिवादियों को उल्लेख मिलता है।[21]

जेदा अभिलेख– जेदा से कनिष्क के दूसरे शासन वर्ष का एक अभिलेख मिला है, जिसमें सर्वास्तिवादियों के लिए दान का उल्लेख मिलता है।[22]

तोर ढिरई अभिलेख बलूचिस्तान में डाबरकोट के समीप तोरदिरई से प्राप्त अभिलेख भी सर्वास्तिवादी आचार्यों के लिए दिये गये दान का उल्लेख करता है।[23]

साहित्यिक स्रोतः डॉ० दत्त के अनुसार सर्वास्तिवाद के संकेत हमें पालि बौद्ध वचनों में ही मिलने लगते हैं। टकाकुस महोदय का मत है कि बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 300 वर्ष बाद कात्यायनीपुत्र द्वारा संकलित ''ज्ञान प्रस्थान शास्त्र'' इस निकाय का आधार ग्रन्थ था। इसी पर चतुर्थ बौद्ध संगीति के अध्यक्ष वसुमित्र ने अपने सहयोगियों के साथ महाविभाषा शास्त्र नामक टीका की रचना की।[24]

मगध से निष्कासित सर्वास्तिवादियों ने अपना अलग विनय ग्रंथ बनाया। यद्यपि यह मूलतः थेरवादी अलग विनय ग्रंथ बनाया। यद्यपि यह मूलतः थेरवादी पालि विनय पर ही आधारित था फिर भी उसने उन अंशों को जिन्हें वे बुद्ध वचन नहीं मानते थे अपने विनय ग्रन्थ में सम्मिलित नहीं किया इस सर्वास्तिवादी विनय को ''गिलगिट मैनुक्रिप्ट'' कहते हैं।[25]

सर्वास्तिवादी ग्रंन्थों में ज्ञान प्रस्थान शास्त्र (कात्यायनी पुत्र कृत) संगीति पर्याय (महाकौष्ठिल कृत) प्रकरणवाद (वसुमित्र कृत), विज्ञानकाय (देवशर्मा कृत्त) धातुकाय (पूर्णकृत), 'प्रज्ञाप्तिशास्त्र (मौदगल्यायकृत) आदि महत्वपूर्ण है।

सर्वास्तिवाद की शाखाएंः सर्वास्तिवाद की सौतान्त्रिक व वैभाषिक से शाखाएं हुयीं। डॉ० गोविन्द चन्द्र पाण्डेय के अनुसार सर्वास्तिवादी चिन्तन ने बौद्ध धर्म के विकास और विस्तार में गुणात्मक योगदान दिया है।

सौतान्तिकों की स्थापनाएं महायानिक विज्ञानवाद की अवतारणा में भी सहायक बनी। सैत्रान्तिकों की सबसे बड़ी विशेषता रही है कि उन्होंने अपनी तार्किक आलोचना से बौद्ध दर्शन को तो आगे बढ़ाया ही साथ ही उसे मूल स्वरूप से अलग भी नहीं होने दिया।

सिल्वा लेवी[26] और पी०एल० बैद्य[27] का अभिमत है कि दिव्यावदान मूलरूप में सर्वास्तिवादियों का ग्रन्थ था। विण्टरनित्ज ने अवदान शतक और कल्पना मण्डतिका को भी सर्वास्तिवादी ग्रन्थ माना है।[28] सिलवा लेवी के अनुासर ललित विस्तार पहले सर्वास्तिवादियों का मूल ग्रंन्थ था जिसे बाद में वैपुल्यवाद का रूप देकर महायानी ग्रन्थ बनाया गया।[29]

संदर्भ

1. मिश्र, जयशंकर. पृष्ठ **827.**
2. रिकार्ड आफ द बुद्धिस्ट रिलिजन अभिलेखिय आलोक में इण्ट्रडेक्शन. पृष्ठ **22.**
3. मिश्र, शंकर. प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास. पृष्ठ **830.**
4. उपासक, सी०एस०. हिस्ट्री ऑफ बुद्धिज्म इन अफगानिस्तन. पृष्ठ **105.**
5. देव, आचार्य नरेन्द्र. बौद्ध धर्म दर्शन. पृष्ठ **312.**
6. कथावत्थु. पृष्ठ **207–209.**
7. रिकाड्र्स आफ द बुद्धिस्ट डिलिजन. जनरल. इण्ट्रोडक्शन. पृष्ठ **21.**
8. बुद्धिस्ट सेक्ट्स इन इण्डिया. पृष्ठ **25–26.**
9. अंगने लाल बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम. पृष्ठ **247.**
10. रिकार्ड ऑफ द बुद्धिस्ट रिलिजन इन्ट्रोडक्शन. पृष्ठ **22.**
11. सैमुअल, चा०ए०. इण्डिया. सि० पृष्ठ **2–4.**
12. रिकार्ड्स ऑफ द बुद्धिस्ट रिलिजन. पृष्ठ **22.**
13. वही. पृष्ठ **10.**
14. बनर्जी, एसी. बुद्धिज्म इन इंण्डिया एण्ड. पृष्ठ **22.**
15. नलिनाक्ष दत्त।

16. अंगन ने लाल बौद्ध संस्कृति के आयाम विविध. पृष्ठ **244.**
17. (1906). आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया. दिा. पृष्ठ **96.**
18. वही. (1904–05). पृष्ठ **68.**
19. का०इ०इ०. जिल्द–2. खण्ड–1. ''महासेनस संघर में अचार्यन सर्वास्तिवादित प्रतिग्रह''. पृष्ठ **137.**
20. उपाध्याय, वासुदेव. स्टडभ्जइन एंशियन्ट इन्स क्रियसन्स. पृष्ठ **39.**
21. का०इ०इ०. जिल्द–2. खण्ड–1. ''महासेनस संघर में अचार्यन सर्वास्तिवादित प्रतिग्रह''. पृष्ठ **39.**
22. वही. जिल्द–2. खण्ड–1. पृष्ठ **145.**
23. वही. जिल्द–2. खण्ड–1. पृष्ठ **176.**
24. रि०बु०रि०. जनरल इण्ट्रोडक्शन. पृष्ठ **21.**
25. लाल, अंगने. बौद्ध संस्कृति के विविध आयाम. पृष्ठ **250.**
26. तुन्गापाओ. जिल्द 8. पृष्ठ **105.**
27. दिव्यावदान की भूमिका. पृष्ठ **16.**
28. हि०ई०लि०. जिल्द–2. पृष्ठ **285.**
29. वही. पृष्ठ **248.**